DEPARTMENT OF HISTORY
11 DAYS WORKSOP
ON
DHOKRA KALA PRASIKSHAN KARYASHALA

REPORT

The Department of History organized 11 days workshop on Dhokra Art Training Workshop for UG & PG students of the college from 17- 27 September 2021. The training Programme was inaugurated on 17th September 2021 and closing ceremony was held on 27th September 2021. The renowned trainers were from Jhitki -Mitki Van hastkala samiti, Kondagaon.

Objectives of the workshop

1. **To acquaint students about rich tribal regional art.**
2. **Training for preservation promotion and promotion of our tribal culture.**
3. **Skill development of students for self-employment.**

About 54 students and 05 teachers attended the workshop. The participants were trained in all four processes.

1. Preparation of Rough structure of figurines with mixture of black soil, white ant soil, rice bran and sand.

2. Threading the structure with honeybee wax

3. Copper metal melting and casting process

4. And finally finishing the figurines.

All the participants enjoyed the workshop. Exhibition of Dokra Art was appreciated by all the visitors. Overall, the workshop was successful and participants acquired the knowledge of rich tribal art of Chhattisgarh.

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)
[पूर्वनाम शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)]
फोन नं.— 0788—22359688, फैक्स नं.— 0788—2212030
Website:- www.govtsciencecollegedurg.ac.in

दुर्ग, दिनांक 16.09.2021

//सूचना//

महाविद्यालय के समस्त विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि इतिहास विभाग के तत्वावधान में ढोकरा शिल्प प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्घाटन समारोह दिनांक 17.09.2021 को प्रातः 10:30 बजे डॉ ए. पी. जे. अब्दुल कलाम स्मार्ट क्लास रूम में आयोजित किया गया है। उक्त समारोह में समस्त विद्यार्थी कोविड—19 रोकथाम के दिशा निर्देशों का पालन करते हुए एवं अनिवार्य रूप से मास्क का उपयोग करें व उपस्थित होवें।

———ooo———

नोटः— अनिवार्यतः मास्क का प्रयोग करें एवं बिना मास्क के कार्यक्रम में प्रवेश वर्जित है।

GOVT. V.Y.T. PG AUTONOMOUS COLLEGE,
DURG, CHHATTISGARH, INDIA
(Erstwhile: Govt. Arts & Science College, Durg)
CPE Phase- II By UGC
Awarded Star College by DBT, New Delhi

NAAC A+

DHOKRA ART TRAINING WORKSHOP

17 September- 27 September 2021

Trainer:- Jhitku Mitki Van Hastkala Samiti,
Shilpgram Kondagaon

Organized by
Department of History
in Association with IQAC

About Dhokra Art:-

Dhokra (also spelt as Dokra) is non- ferrous metal casting using the lost-wax casting technique. This sort of metal casting has been used in India from Harappan Civilization. One of the earliest known lost-wax artefacts is the dancing girl of Mohenjodaro.

The tribal communities of Bastar have been protecting this rare art from generation to generation. This art is made by conventional tools rather than using the modern machines. This process calls for a great deal of precision and skill. The artefacts prepared from Dhokra technique use the cow-dung, paddy husk and red soil in the preparation, beeswax being the most important one. Apart from contouring, wax wire are also used for decoration purpose and for giving a finishing touch of artefacts.

Organizing Committee

1. Prof. Meeta Chakraborty
2. Prof. M. A. Siddiqui
3. Prof. O. P. Gupta
4. Prof. Rajendra Choubey
5. Prof. Shikha Agrawal
6. Prof. Abhinesh Surana
7. Prof. Purna Bose
8. Prof. Anupama Asthana
9. Prof. Ranjana Shrivastava
10. Prof. Kanti Chaubey
11. Prof. Anil Shrivastava
12. Dr. S.D. Deshmukh
13. Dr. Sandhya Agarwal
14. Dr. Pragya Kulkarni
15. Dr. Shakeel Husain
16. Dr. Rachita Shrivastava
17. Dr. Bhawna Mohale
18. Mr. Vinod Ahirwar
19. Mr. Durgesh Kotangle
20. Mr. Janendra Diwan

Working Committee

Dr. Jyoti Dharkar
Dr. Kalpana Agrwal
Dr. Ajay Singh
Dr. Suchitra Sharma
Dr. K.Padmawati
Dr. Mercy George

HOD & Coordinator
Dr. A.K.Pandey

Principal & Patron
Dr. R.N.Singh

साइंस कॉलेज में ढोकरा शिल्प प्रशिक्षण कार्यशाला

11 दिवसीय आयोजन 27 सितम्बर तक चलेगा

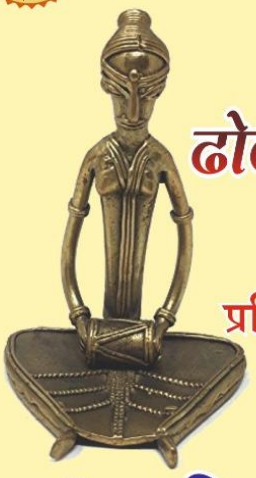

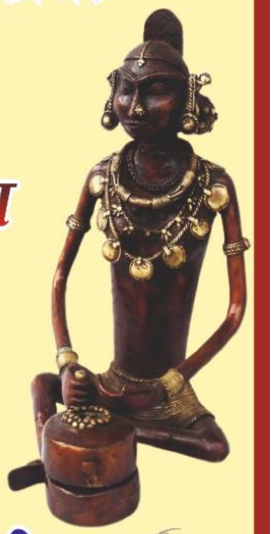

दुर्ग. शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग में इतिहास विभाग व आईक्यूएसी के संयुक्त तत्वावधान में 17 सितंबर से 27 सितंबर तक 11 दिवसीय ढोकरा शिल्प प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है. कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह ने की. अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में आधुनिक समय में लोक कला के विकास व विद्यार्थियों को वैश्विक समाज के अनुसार अपने को ढालने के लिए प्रेरित किया. महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. एम सिद्धकी ने इतिहास व कला के बीच के अटूट संबंध पर प्रकाश डाला. विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार पांडे ने ढोकरा कला का इतिहास व इसकी प्रासंगिकता पर सभी का ध्यान आकृष्ट किया. कलाकार राजेंद्र बघेल ने इस कला के विकास व महत्व पर संक्षिप्त प्रकाश डाला. आईक्यूएसी के अध्यक्ष डॉ. सलूजा ने विद्यार्थियों को इस कला वह कार्यशाला से अधिकाधिक लाभ लेने को कहा. अंत में डॉ ज्योति धारकर ने सभी अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया एवं कार्यक्रम का संचालन डॉ कल्पना अग्रवाल ने किया.

हुनर मधुमक्खी के छाते और दीमक की मिट्टी से बन रहा शिल्प

पत्रिका टैलेंट टॉक

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

भिलाई. मोबाइल, इंटरनेट और वेब सीरिज के दौर में अगर युवाओं का रुझान कलाकृतियों को सीखने में लग जाए तो आश्चर्य जरूर होगा,लेकिन साइंस कॉलेज दुर्ग में इन दिनों चल रहे बस्तर के प्रसिद्ध और पारंपरिक ढोकरा शिल्पकला की वर्कशॉप में युवाओं का हुजूम उमड़ पड़ा है। कॉलेज के इतिहास विभाग और आईक्यूएसी की ओर से कॉलेज में 11 दिन की कार्यशाला रखी गई है। जिसमें कोंडागांव से आए राष्ट्रीय स्तर के कलाकार युवाओं को ढोकला शिल्पकला सिखा रहे हैं। युवाओं का कहना है कि अपनी परंपरा और शिल्प से हमें तब तक लगाव नहीं होता, जब तक हम उसका अहसास नहीं करते। शिल्पकला भी कुछ ऐसी ही है। जब तक हम इसे तैयार होते नहीं देखेंगे, इसके पीछे की मेहनत और कला को समझ नहीं पाएंगे। इस वर्कशॉप में उन्होंने जब ढोकरा शिल्प को बनाने का तरीका सीखा तो अब उनके अंदर का कलाकार अब खुलकर सामने आने लगा।

इसलिए होती है महंगी मूर्तियां

कलाकार राजेन्द्र बघेल ने बताया कि ढोकरा शिल्प की कलाकृति काफी महंगी होती है, क्योंकि इसे तैयार करने में काफी मेहनत लगती है। उन्होंने बताया कि कुल 13 चरणों से गुजरकर इसे बनाया जाता है। जिसमें खास नदी की मिट्टी, मधुमक्खी के छाते से तैयार मोम, दीमक के टीले की मिट्टी, धान का भूसा, जैसी चीजों का उपयोग किया जाता है। वहीं आखिरी चरण में मेटल को पिघलाकर इसे मूर्ति का रूप दिया।

अब समझ आई मेहनत

ढोकरा शिल्पकला में जहां इसके कलाकारों की कलाकृतियों में वन्य जनजीवन और वहां की संस्कृति की छवि नजर आती है, तो युवाओं की कलाकृतियों में आदिवासी संस्कृति के संग मॉडर्न आर्ट की भी झलक दिखाई दे रही है। युवाओं का कहना है कि इस खूबसूरत कलाकृति को देखकर अंदाजा लगाना ही मुश्किल था कि इसके पीछे कितनी मेहनत लगती है। यहां हर युवा दो से तीन कलाकृति बना रहे हैं। उनका कहना है कि इसमें रोजगार की भी असीम संभावना तो है ही साथ ही इसे आगे बढ़ाकर हम बस्तर की संस्कृति को विश्व पटल तक भी पहुंचा सकते हैं।

संस्कृति से जुड़ने का मौका

कॉलेज के प्राचार्य डॉ. आरएन सिंह ने कहा कि आधुनिक समय में लोक कला के विकास व विद्यार्थियों को वैश्विक समाज के अनुसार अपने को ढालने के लिए यह वर्कशॉप काफी उपयोगी है। इतिहास के विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय ने बताया कि ढोकराकला को सीखने युवाओं ने अच्छा उत्साह दिखाया है। इस वर्कशॉप में प्रोफेसर ज्योति धारकर सहित अन्य सहयोग कर रहे हैं।

दुर्ग हरिभूमि 10

ढोकरा शिल्प प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्घाटन

दुर्ग। शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय में इतिहास विभाग व आईक्यूएसी द्वारा 11 दिवसीय ढोकरा शिल्प प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. आरएन सिंह ने किया। उन्होंने कहा कि आधुनिक समय में लोक कला के विकास व विद्यार्थियों को वैश्विक समाज के अनुसार अपने को ढालने के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

विद्यार्थियों को इस प्राचीन कला को सीख कर अपने ज्ञान के द्वारा इस कला को परिमार्जित कर वैश्विक स्तर पर लोगों के समक्ष लाने एवं रोजगार व कौशल उन्नयन के क्षेत्र में नवीन उपलब्धियाँ अर्जित करने प्रेरित किया। वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. एम. सिद्दीकी ने इतिहास व कला के बीच के अटूट संबंध पर प्रकाष डाला। विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय ने ढोकरा ... इतिहास व इसकी प्रासंगिकता पर सभी का ध्यान आकृष्ट किया। कलाकार राजेन्द्र बघेल ने इस कला के विकास व महत्व पर संक्षिप्त प्रकाश डाला। डॉ. सलूजा ने विद्यार्थियों को इस कला व कार्यशाला से अधिकाधिक लाभ लेने कहा। अंत में डॉ. ज्योति धारकर ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. कल्पना अग्रवाल ने किया।

साइंस कॉलेज दुर्ग में ढोकरा शिल्प प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

मधुमक्खी के छाते व दीमक की मिट्टी के बस्तर आर्ट

नवभारत रिपोर्टर ◆ दुर्ग.
www.navbharat.org

दुर्लभ व विलुप्तप्राय बस्तर आर्ट को संजीवनी देने साइंस कॉलेज दुर्ग में 10 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया है. कार्यशाला में झिटकू मिटकी वन हस्तकला समिति शिल्प ग्राम कोण्डागांव से प्रशिक्षक आए हैं. इनके द्वारा छात्र-छात्राओं को निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जा रहा है. प्रकृति व वन्य जीवों की जीवंत मूर्तियों का निर्माण कार्यशाला में किया जा रहा है. धार्मिक मान्यताओं से संबंधित कलाकृति, देवी-देवताओं तथा आदिवासियों की जीवन शैली की झलक भी कार्यशाला में दिख रही है. दीमक की मिट्टी व मधुमक्खी के छाते का उपयोग कलाकृति निर्माण में किया जा रहा है, जो छात्र-छात्राओं के लिए कौतूहल का विषय बना हुआ है.

साइंस कॉलेज दुर्ग के प्राध्यापक डॉ. अनिल कुमार पांडे (विभागाध्यक्ष इतिहास) ने बताया कि प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह के मार्गदर्शन में बस्तर की बेजोड़ कला संस्कृति को उभारने कार्यशाला लगाई गई है, जो 27 सितम्बर तक जारी रहेगा. डॉ. पांडे ने कहा कि कलाकृतियों के निर्माण की लंबी प्रक्रिया है. यहां निर्मित विलुप्त कलाकृतियां मोहन जोदड़ो व हड़प्पा सभ्यता की है. जिसे पुनर्जीवित कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक पहचान बनाने प्रचार-प्रसार किया जा रहा है. इससे आदिवासी कलाकृति को बढ़ावा तो मिलेगा, साथ ही विद्यार्थियों का स्कील डेव्हलप होगा एवं रोजगार के मार्ग प्रशस्त होंगे. रविवार को कलाकृतियों की बारीकियां जानने विशेष तौर पर हेमचंद दुर्ग विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता छात्र कल्याण, डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव मौजूद थे.

स्किल डेवलपमेंट का प्लेटफार्म- जैनब

साइंस कॉलेज दुर्ग में अध्ययनरत एम.ए. इतिहास की छात्रा जैनब खातून ने कार्यशाला को बेहद लाभप्रद बताया. उन्होंने कहा कि ढोकरा शिल्प कला से हमारे प्राचीन कला संस्कृति को एक मंच मिलेगा. बस्तर की स्थानीय कला से स्कील डेव्हलप होगा और लघु उद्योग का मार्ग खुलेगा.

जनजाति समूहों की कला- दीपांशी

साइंस कॉलेज दुर्ग में एमए इतिहास में अध्ययनरत छात्रा दीपांशी द्विवेदी ने ढोकरा कला संस्कृति को जनजाति समूहों की कला बताया. कार्यशाला से जनजाति समूहों की कला को एक बेहतर प्लेटफार्म मिलेगा और राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस कला को एक नई पहचान मिलेगी.

बढ़ेंगे रोजगार के अवसर- रोमा

साइंस कॉलेज दुर्ग में अध्ययनरत बीए अंतिम वर्ष की छात्रा रोमा सिन्हा ने कहा कि हड़प्पा काल की शिल्प कला का प्रदर्शन कार्यशाला में किया जा रहा है. यह दुर्लभ कलाकृतियों का निर्माण सिद्धहस्त कलाकारों के मार्गदर्शन में हो रहा है. इससे रोजगार के अवसर बढ़ेंगे.

कलाकृति से जीवकोपार्जन- रतु राम

कार्यशाला में प्रशिक्षण दे रहे बंदापारा (कोण्डागांव) निवासी रतु राम नेताम ने बताया कि बस्तर शिल्प कला निर्माण से करीब 25 परिवार जुड़े हैं और जीविकोपार्जन का यही माध्यम है. उन्होंने बताया कि उनके साथ टीलू राम बघेल व राजकुमार सोरी भी बतौर प्रशिक्षक कार्यशाला में शामिल हैं.

GPS Map Camera
Railway Colony, Chhattisgarh, India
Durg Junction, Railway Colony, Chhattisgarh 491001, India
Lat 21.196376°
Long 81.297892°
17/09/21 12:42 PM

GPS Map Camera
Railway Colony, Chhattisgarh, India
Durg Junction, Railway Colony, Chhattisgarh 491001, India
Lat 21.196376°
Long 81.297892°
17/09/21 12:10 PM

GPS Map Camera
Railway Colony, Chhattisgarh, India
Durg Junction, Railway Colony, Chhattisgarh 491001, India
Lat 21.19642°
Long 81.297456°
19/09/21 11:37 AM
Google